# De tichoscopia Euripidis Phoenissis inserta.

In canticis graecis interpretandis cum duabus viri docti uti soleant rationibus, altera ut versibus colis metris strenue discriptis singula membra si non suo quodque at certe sollemni aliquo nomine ornent, altera ut omnibus unius cantici rhythmis margaritarum ad instar continuatis pares similesve figuras intervallo haud ita magno repetitas respondere inter se dicant, utramque rationem necessariam aut aliquatenus utilem esse nemo negabit. Tamen si miratus sit quispiam, cur ne coniunctae quidem ad structuram cantici perspiciendam iudicioque satis stabilito aestimandam sufficiant, is re accuratius paullo ponderata mirari desinet. Nam primum quidem membra multa eandem aut similem speciem prae se ferentia natura sunt plane diversa. Deinde quoniam respondere inter se cum in ceteris artibus, tum maxime in arte musica non solum paria aut similia constat, verum etiam contraria aut ingeniose variata, fieri posse consentaneum est, ut membra vel diversissimis metris composita cantici quasi corpus contuenti eodem munere fungi videantur. Denique cum quae admittere liceret in versuum vel periodorum fine, velut hiatum et syllabam ancipitem, ea affectanda sibi esse poetae non putarent, nonnunquam factum est, ut terminos vel stationes ut ita dicam, quibus secernerentur periodi, parum luculentis significarent indiciis.

In his tenebris nullam video fore lucem, nisi prius et singulis canticis circumspecto iudicio excussis quae membra quo pondere quasi esse poetae voluerint et quibus metra temporum decursu mutationibus inde a natalibus quas quidem observatione aut divinatione assequi possimus usque ad torporem quasi senilem affecta sint plane cognoverimus.

Quod opus, praesertim in tam lubrico lectionis carminum statu et in tanta aurium nostrarum barbarie, non solum laboribus, verum etiam erroribus immensum absolvere uti non est unius scriptiunculae, ita ne hominis quidem unius. Hoc vero prooemio, quod ad conscribendum quantum temporis concessum fuerit diebus facilius quam mensibus emetiare, nihil amplius efficere in animo est, quam ut uno aliquo provectioris artis exemplo cognoscatur, quid in canticis sive minoribus sive amplioribus dissolvendis ac denuo quasi instaurandis imprimis quaerendum sit, quid si dis placuerit inveniri iam nunc posse videatur.

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

## Α(ΝΤΙΓΟΝΗ) Π(ΑΙΔΑΓΩΓΟΣ)

| Eur. Phoen. | | | Hermanni | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 103 | Α | ὄρεγε νῦν ὄρεγε γεραιὰν νέᾳ | str. α′ | 6 | | |
| | | χεῖρ᾽ ἀπὸ κλιμάκων [ποδὸς] ἴχνος ἐπαντέλλων. | — | 6 | 12 | |
| 105 | Π | ἰδοῦ ξύναψον, παρθέν᾽· ἐς καιρὸν δ᾽ ἔβης· | | 6 | | |
| | | κινούμενον γὰρ τυγχάνει Πελασγικὸν | | 6 | | |
| | | στράτευμα, χωρίζουσι δ᾽ ἀλλήλων λόχους. | | 6 | 18 | |
| 108 | Α | ἰὼ πότνια παῖ Λατοῦς Ἑκάτα, | β′ | 6 | | |
| | | κατάχαλκον ἅπαν πεδίον ἀστράπτει. | — | 6 H | 12 | 42 |
| 111 | Π | οὐ γάρ τι φαῦλος ἦλθε ΠΟΛΥΝΕΙΚΗΣ χθόνα, | | 6 ∨ | | |
| | | πολλοῖς μὲν ἵπποις, μυρίοις δ᾽ ὅπλοις βρέμων, | | 6 | 12 | |
| 114 | Α | ἆρα πύλαι κλῇθροις χαλκόδετά τ᾽ ἔμβολα | γ′ | 6 ∨ | | |
| | | λαϊνέοισιν Ἀμφίονος ὀργάνοις τείχεος ἥρμοσται; | — | 6+3 | 15 | |
| 117 | Π | θάρσει· τά γ᾽ ἔνδον ἀσφαλῶς ἔχει πόλις. | | 6 ∨ | | |
| | | ἀλλ᾽ εἰσόρα τὸν πρῶτον, εἰ βούλει μαθεῖν. | | 6 | 12 | 39 |
| 119 | Α | τίς οὗτος ὁ λευκολόφας, | δ′ | 3 | | |
| | | πρόπαρ ὃς ἀγεῖται στρατοῦ | | 4 | | |
| | | πάγχαλκον ἀσπίδ᾽ ἀμφὶ βραχίονι κουφίζων; | — | 2+3+2= | 14 | |
| 123 | Π | λοχαγός, ὦ δέσποινα. Α τίς, πόθεν γεγώς; | | 6 | | |
| | | αὔδασον ὦ γεραιέ, τίς ὀνομάζεται; | | 6 H | 12 | |
| 125 | Π | οὗτος Μυκηναῖος μὲν αὐδᾶται γένος, | | 6 | | |
| | | Λερναῖα δ᾽ οἰκεῖ νάμαθ᾽, ΙΠΠΟΜΕΔΩΝ ἄναξ. | | 6 | 12 | |
| 127 | Α | ἒ ἔ, ὡς γαῦρος, ὡς φοβερὸς εἰσιδεῖν, | ε′ | 6 | 6 | |
| | | γίγαντι γηγενέτᾳ προσόμοιος | | 2+3 ∨ | | |
| | | ἀστρωπὸς ἐν γραφαῖσιν, οὐχὶ πρόσφορος | | 6 ∨ | | |
| 130 | | ἀμερίῳ γέννᾳ. | — | 3 | 14 | 58 |
| 131 | Π | τὸν δ᾽ ἐξαμείβοντ᾽ οὐχ ὁρᾷς Δίρκης ὕδωρ; | | 6 | | |
| | Α | ἄλλος ἄλλος ὅδε τευ-χέων τρόπος· | | 6 | 12 | |
| | | τίς δ᾽ ἐστὶν οὗτος; Π παῖς μὲν Οἰνέως ἔφυ, | | 6 | | |
| | | ΤΥΔΕΥΣ, Ἄρη δ᾽ Αἰτωλὸν ἐν στέρνοις ἔχει. | | 6 H | 12 | |
| 135 | Α | οὗτος ὁ τᾶς Πολυνείκεος, ὦ γέρον, | | | | |
| | | αὐτοκασιγνήτᾳ νύμφας | ς′ | 4+3+2= | 9 | |
| | | ὁμόγαμος κυρεῖ; | — | 3 H | | |
| | | ὡς ἀλλόχρως ὅπλοισι, μειξοβάρβαρος. | | 6 | 9 | 42 |
| 139 | Π | σακεσφόροι γὰρ πάντες ΑΙΤΩΛΟΙ, τέκνον, | | | | 6 |
| | | λόγχαις τ᾽ ἀκοντιστῆρες εὐστοχώτατοι. | | | | 6 |
| | Α | σὺ δ᾽, ὦ γέρον, πῶς αἰσθάνει σαφῶς τάδε; | | | | 6 ∨ 18 |
| 142 | Π | σημεῖ᾽ ἰδὼν τότ᾽ ἀσπίδων ἐγνώρισα, | | | | 6 ∨ |
| | | σπονδὰς ὅτ᾽ ἦλθον σῷ κασιγήτῳ φέρων· | | | | 6 |
| | | ἃ προσδεδορκὼς οἶδα τοὺς ὡπλισμένους. | | | | 6 18 |
| 145 | Α | τίς δ᾽ οὗτος ἀμφὶ μνῆμα τὸ Ζήθου περᾷ | | | ζ′ | 6 |
| | | καταβόστρυχος, ὄμμασι γοργός, εἰσιδεῖν νεανίας | | | | 4+3 |
| | | λοχαγός; ὡς ὄχλος νιν ὑστέρῳ ποδὶ | | | | 6 ∨ |
| | | πάνοπλος ἀμφέπει. | | | | 3 H 22 |

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

150 Π ὅδ' ἐστὶ ΠΑΡΘΕΝΟΠΑΙΟΣ, Ἀταλάντης γόνος. 6 v
Α ἀλλά νιν ἁ κατ' ὄρη μετὰ ματέρος
Ἄρτεμις ἱεμένα τόξοις δαμάσασ' ὀλέσειεν, η' 4+3+3
ὃς ἐπ' ἐμὰν πόλιν ἔβα πέρσων. 2+3 21
154 Π εἴη τάδ' ὦ παῖ. σὺν δίκῃ δ' ἥκουσι γῆν· 6
ὃ καὶ δέδοικα μὴ σκοπῶσ' ὀρθῶς θεοί. 6
156 Α ποῦ δ' ὃς ἐμοὶ μᾶς ἐγένετ' ἐκ ματρὸς πολυπόνῳ μοίρᾳ; θ' 9 H 21 58+42

158 (Α) ὦ φίλτατ', εἰπέ, ποῦ 'στι ΠΟΛΥΝΕΙΚΗΣ, γέρον; 6 v 6
Π ἐκεῖνος ἑπτὰ παρθένων τάφου πέλας 6
160 Νιόβης Ἀδράστῳ πλησίον παραστατεῖ. 6 H
ὁρᾷς; Α ὁρῶ δῆτ' οὐ σαφῶς, ὁρῶ δέ πως 6
μορφῆς τύπωμα στέρνα τ' ἐξηκασμένα. 6 H v 24
ἀνεμώκεος εἴθε δρόμον νεφέλας
ποσὶν ἐξανύσαιμι δι' αἰθέρος ι' 4+4
165 πρὸς ἐμὸν ὁμογενέτορα, περὶ δ' ὠλένας 6 14
δέρᾳ φιλτάτᾳ βάλοιμ' ἐν χρόνῳ φυγάδα μέλεον. ὡς 9 9
ὅπλοισι χρυσέοισιν ἐκπρεπής, γέρον, 6 v
ἑῴοις ὅμοια φλεγέθων βολαῖς ἁλίου. 3+3+2 H 14
170 ἥξει δόμους τούσδ', ὥστε σ' ἐμπλῆσαι χαρᾶς, 6
ἔνσπονδος. Α οὗτος δ', ὦ γεραιέ, τίς κυρεῖ, 6 H
ὃς ἅρμα λευκὸν ἡνιοστροφεῖ βεβώς; 6
173 ὁ μάντις ΑΜΦΙΑΡΑΟΣ, ὦ δέσποιν', ὅδε· 6 v
σφάγια δ' ἅμ' αὐτῷ, γῆς φιλαίματοι ῥοαί. 6 30 (58+39)

175 Α ὦ λιπαροζώνου θύγατερ Ἁλίου ια' 6
Σελαναία, χρυσεόκυκλον φέγγος. 6 v 12
ὡς ἀτρεμαῖα κέντρα καὶ σώφρονα 6 v
πώλοις μεταφέρων ἰθύνει. 3+3= 12
ποῦ δ' ὃς τὰ δεινὰ τῇδ' ἐφυβρίζει πόλει 6
180 ΚΑΠΑΝΕΥΣ; Π ἐκεῖνος [ἑπτὰ] προσβάσεις τεκμαίρεται 6
πύργων ἄνω τε καὶ κάτω τείχη μετρῶν. 6 18
Α ἰώ,
182 Νέμεσι καὶ Διὸς βαρύβρομοι βρονταί, ιβ' 6
κεραύνιόν τε φῶς αἰθαλόεν, σύ τοι 6
μεγαλαγορίαν ὑπεράνορα κοι-μίζεις· 4+2= 18
185 ὅδ' ἐστίν, αἰχμαλώτιδας ιγ' 4 v 4
ὃς δορὶ Θηβαίας Μυκήναισιν ⟨εὐ-
χεται⟩ Λερναίᾳ τε δώσειν τριαί-
νᾳ, Ποσιδανίοις Ἀμυμωνίοις 6+6+6 18
ὕδασι, δουλείαν περιβαλών; 3+2
190 μήποτε μήποτε τάνδ', ὦ πότνια, ιδ'
χρυσεοβόστρυχον ὦ Διὸς ἔρνος, Ἄρτεμι, 4+3+3 v
192 δουλοσύναν τλαίην. 3 18 (42+58)

104 corr. Bothe 111 *φαύλως* libri, corr. Nauck 115 *λαϊνέοις*, Seidler 129 *ἀστεροπός*, G Dindorf
136 *αὐτοκασιγνήτας*, Reiske 156 *ματέρος*, Hermann 180 corr. Valckenaer 186/7 suppl. Matthiae

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Euripides igitur in Phoenissis post Iocastae prologum paedagogum senem cum Antigona colloquentem inducit Homericam nimirum tichoscopiam imitans. At vide quam dramatice omnia procedant. Senex in aedium tecta, unde Argeorum exercitus prospici posset, praegressus, ut ecquis adesset de maledica plebe specularetur, simulac purum locum esse cognovit, virginem scala cedrina ad se escendere iubet. Ad quae puellula delicatius paullo: *ὄρεγε νῦν ὄρεγε γεραιὰν νέᾳ χεῖρα,* ubi *ὄρεγέ νυν* equidem praeferrem, si de dochmio acephalo (⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑) constaret, nisi forte terminari dochmio versum putas (⏑ ⏑ ⏑ ⏑⏓). Sed poetae Attici, dummodo metro satisfieret, promiscue videntur usurpasse *νὺν* et *νῦν*. Pergit Antigona: *χεῖρ' ἀπὸ κλιμάκων* [*ποδὸς*] *ἴχνος ἐπαντέλλων,* ut e Bothii coniectura deleto *ποδὸς* legendum esse ipse quoque arbitror; non quo *ποδὸς ἴχνος* per se stare non possit, sed primum codicis Marciani glossa *ἤγουν τὸν πόδα* ad *ἴχνος**) potius quam ad *ποδὸς ἴχνος* videtur pertinere, deinde exquisita elegantia poetam vocabulum *πόδα* vitasse opinor, ne putidiuscule *ὄρεγε χεῖρα — πόδα ἐπαντέλλων* opponi viderentur, tum dimetro iambico velut *χεῖρ' ἀπὸ κλι-μάκων ποδὸς* claudi quam interrumpi dochmios usitatius, denique quattuor dochmiis *ὄρεγέ νυν κτλ* mox alteros quattuor dochmios respondere videbimus; quibus Antigona post tres trimetros a paedagogo interiectos Hecatam Latonae filiam testata campi armis aëneis fulgurantis in admirationem erumpit: *ἰὼ πότνια παῖ / Λατοῦς Ἑκάτα / κατάχαλκον ἅπαν / πεδίον ἀστράπτει.* Quos esse dochmios forma binis vicibus anapaestica non est quod amplius exponam; sed *Λαατοῦς Ἑκάτα κατάχαλκον ἅπαν* pronuntiandum esse, ut re vera dochmii evadant, ut mihi persuasissimum est, ita persuadere surdis auribus nolo, dummodo plenos ac perfectos dochmios esse concedatur. 'Sane non inermis', inquit paedagogus, 'Polynices ad urbem accessit, mille equitibus, sescentis hoplitis horrens'. Tum praecoci quadam prudentia puellarique pavore Antigona mixta: *ἆρα πύλαι κλῄθροις χαλκόδετά τ' ἔμβολα / λαϊνέοισιν Ἀμφίονος ὀργάνοις τείχεος ἥρμοσται;* dochmiis quinque. Sedata intempestiva puellulae cura initium facere singulos duces sciscitandi paedagogus iubet. Ergo: *τίς οὗτος ὁ λευκολόφας, πρόπαρ ὃς ἀγεῖται στρατοῦ πάγχαλκον ἀ-σπίδ' ἀμφὶ βραχίονι κου-φίζων;* Non absurde respondetur: *λοχαγός, ὦ δέσποινα,* i. e. unus e claris illis Septem ducibus.**) Cuius nomen gentemque ubi primum comperit Hippomedontis Mycenaei, ut de quo nihil adhuc audiverit, Antigona tota in admiratione et horrore defixa: *ἔ ἔ, ὡς γαῦρος, ὡς-φοβερὸς εἰσιδεῖν, / γίγαντι γηγενέτᾳ προσόμοιος / ἀστρωπὸς ἐν γραφαῖσιν, οὐχὶ πρόσφορος / ἀμερίῳ γέννᾳ.* De verborum interpretatione conferendi duo ex scholiastis: *ἀστεροειδεῖς τὸ σῶμα καὶ τὴν ἐσθῆτα γράφουσι τοὺς Γίγαντας πρὸς τὸ φοβερόν,* et: *διὰ μέσου δὲ ἀστ(ε)ρωπὸς ἔθηκε.* Alii *ἀστεροειδὴς καὶ ποικίλος ταῖς γραφαῖς* malunt *τῆς ἀσπίδος,* quod vellem addidisset poeta; nunc *πρέπουσαν ὡς ἐν γραφαῖς Κασσάνδραν* conferre iuvabit (Aesch. Ag. 241), Euripidem vero facilius credideris audaciore paullo vocabulorum collocatione uti voluisse, quam sententias artissime cohaerentes religioso quodam horrore perfusas interrumpere observatione satis exili, qua splendor ille incredibilis ac divinus ad naturam et veritatem revocandus esse videretur, satis exiliter expressa. Metrum duarum Antigonae vocum paullo exquisitius: ordinem trinarium prosodiacum excipit dimeter iambicus prima arsi intercepta, prima thesi soluta, tum duo metra iambica, alterum integrum alterum bis contractum, interiecto rursus prosodiaco illo membro trinario; altero loco post duos dochmios, e quibus prior laxiore forma est a Sophocle et Euripide admissa nonnunquam (infra v. 183), interiectionibus *ἔ ἔ* solito more iambum quasi repraesentantibus (⏑⏓μ), recurrit iambicum metrum cum trinario prosodiaco catalectico, subsequitur trimeter iambicus certissimis signis utrimque terminatus cum dochmio, ut efficiantur theses primariae illic quattuordecim, hic sex et alterae quattuordecim.

Sed priusquam pergamus, de metris rite commensurandis pauca ut verba faciam: iambos trochaeos glyconeos ionicos anapaestos metris dipodicis metiendos esse consentiunt periti.

---

*) *ἴχνος,* ut *ἴχματα ἴθματα Ἰσθμός,* ab *ἰϝέναι!*

**) *ἑπτὰ θούριοι λοχαγέται* apud Aeschylum, *ἑπτὰ λοχαγοί* apud Sophoclem.

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Dactylos lyricos dipodice metiendos esse diu est ex quo docui nec multis persuasisse videor. Adhuc si quis credere se posse negaverit, aut poterit docente Wilamowitzio *Griech. Trag.* III (1906) 156. 311 aut coactus erit posse recognita longa quae in promptu nobis est responsionum dipodicarum serie. Simiae Rhodii poetae grammatici 'trimetris' insolenter dimensis, *Πιερίδων μονόδουπον αὐδάν* vel *αἶψα μεθ' ἱμερόεντα μαζόν*, haud facile quisquam adeo movebitur, ut propterea de poetarum vere lyricorum, inde ab Alcmane usque ad Timotheum, vel inde ab Aeschylo usque ad Euripidem, in dimetris illis Alcaicis usu constanter observato secus iudicandum esse existimet, praesertim cum eundem illum versificatorem funambulum in versibus Ovi 'decametris' membrum Adoneum v. c. pro 'dimetro' venditare animadverterit. Neque esse video quod poetae ludibundo non struthiocamelinum statim ovum ad manus habenti vel chartae angustiis laboranti ignoscamus deprecante Bergkio propter nimiam scilicet futuram versuum longitudinem (Anthol lyr. [2] p. LXXVIII). Nam grammatici errorem subesse multo probabilius est. Qui error unde natus sit apparet ex scholiis Heph. p. 174/75: *ἐὰν γὰρ ὑπερβῇ τὸ δακτυλικὸν τὸ ἑξάμετρον, κἀκεῖνο βαίνεται κατὰ διποδίαν. ἐὰν μέντοι ἐντὸς ᾖ τοῦ ἑξαμέτρου, τὴν ἐξουσίαν ἔχει βαίνεσθαι κατὰ μονοποδίαν*, quae coll. Mar. Victorin. p. 70, 12 ss K non sine puri fontis quadam turbatione ex Aristoxeni doctrina fluxisse manifestum est dactylos epicos a melicis strenue discernentis. Versum igitur heroum cum sex mensuris nescio quibus metiendum esse inde ab Herodoti et Platonis temporibus constiterit inter Graecos, quid mirum, quod ex quo cantare omnino vel cantui pangere carmina desierunt poetae, non solum 'pentametri' famosum nomen invenit aut ab alio inventum recepit Hermesianax (2,35), sed *κατὰ μονοποδίαν μετρεῖσθαι τὰ δακτυλικά* vel doctioribus placuit, ut Heliodoro (schol. Ar. ran. 208)? Asclepiadei qua ratione ad glyconeos, dochmii qua ad asclepiadeos revocandi esse viderentur nuperrime exposui Philol. 64, 1905, 493. Addere hoc loco duo dochmiorum exempla iuvat, alterum priscam antiquitatem redolens, trimetrum asclepiadeo-dochmium, *ἰδέ με τὰν ἱκέτιν φυγάδα περίδρομον = σὺ δὲ παρ' ὀψιγόνου μάθε γερα(ὰ) φρονεῖν* Aesch. suppl. 349 = 61, alterum popularis cantilenae vetustati novum quendam nitorem admiscens: *ἰὼ ἰώ, γενναιότατ' ὠ-θεῖτε σπεύδετ' ἐκ-κάετε τὴν ὀφρύν / θηρὸς [τοῦ] ξενοδαίτα / τύφετ' ὦ / κάετ' ὦ / τὸν Αἴτνας-μηλονόμον.-τόρνευ' ἕλκε, μὴ σ'-ἐξοδυνηθείς / δράσῃ τι μάταιον*, Eur. Cycl. 656—62. Tria membra trinaria continuata exhibet etiam Pindari adulescentis carmen Pyth. X, senis Olymp. IV (dochmio scilicet excluso), dochmium prima thesi soluta, arsi altera hausta (*ἐξοδυνηθείς*) pleno dochmio respondentem Eur. Andr. 861 ~ 65, *Φθιάδος ἐκ γᾶς ~ πρωτόπλοος πλάτα*, dochmium contracta forma paenultimo loco insertum idem Bacch. 1037, *ὁ Διόνυσος ὁ Δι[ονυσ]ός, οὐ Θῆβαι / κράτος ἔχουσ' ἐμόν*. Praeter asclepiadea illa sesquimetra, e quibus dochmios coaluisse Athenis censeo, cetera quoque membra trinaria, quorum de origine verbo transigere nefas esse puto, geminatim fere disposita antiquitus fuisse si non ex elegiae ionicae versu altero bis trinario, at vel e puerorum Rhodiorum chelidonismo cognoscitur:

*ἦλθ' ἦλθε χελιδών*
*καλὰς ὥρας ἄγουσα [καὶ]καλοὺς ἐνιαυτούς,*
*ἐπὶ γαστέρα λευκά, ἐπὶ νῶτα μέλαινα κτλ,*

id quod non fugit Hermannum Usener *Altgr. Versb.* 82/3, de versiculorum rhythmo ipso longe aliter sentientem. Qua denique arte in geminandis membris Sophocles utatur, ut binis membris puris atque integris bina subiungat infracta ac paene dissoluta, intellegitur ex Aiacis

vv. 605—08:

*χρόνῳ τρυχόμενος, κακὰν ἐλπίδ' ἔχων*
*ἔτι μέ ποτ' ἀνύσειν τὸν ἀπότροπον ἀίδη- λον Ἅιδαν.*

= 617—21:

*τὰ πρὶν δ' ἔργα χεροῖν μεγίστας ἀρετᾶς*
*ἄφιλα παρ' ἀφίλοις ἔπεσ' ἔπεσε μελέοις Ἀτρείδαις.*

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Antigona igitur, theses primarias si numeramus, in Hippomedonte metris utitur his.

3 4 2 + 3 + 2

3 3 || 2 + 3 6 3

ut respondere inter se et iambos nescio quo ordine et membra trinaria appareat, prosodiaco ultimo in dochmium mutato, sicuti desinere dochmios vidimus in prosodiacum catalecticum, Reizianum quod vocare satis habent qui nihil dictum volunt.

Haec cum vera sint neque ulli aut dubitationi aut calumniae obnoxia, id unum quaeritur, nobis utrum documento esse velimus necne; qua in re ut errare proclive, ita meliora docenti oboediendum erit. Ac discere primum quidem videmur:

> eodem circuitu, eisdem vel similibus quantum suspicari licet melodiae modulis membra variari mutata numerorum moderatione — res in arte musica sollemnis et Musis si placuerit dulcedinis fons uberrimus,

deinde:

> periodos circuitu eodem vel certis quibusdam rationibus — proodis mesodis epodis adiectis dico — amplificato variari aut membris paullo secus ordinatis aut mutata omnino periodi in membra divisione,

tum:

> quod in arte grammatica enuntiatum, idem in metrica arte, si non apud mortales omnes, at apud Graecos certe, principio esse periodum, i. e. binorum parium — cum grano salis accipias velim — vel trinorum, sed binorum utique parium, membrorum quasi quoddam symplegma tam arte coniunctum, ut discindi separarique aut parium certe membrorum fraudari altero utro nequeat, quin totius corporis quasi intereat anima.

Quas in periodis vel minimis conformandis adhiberi videmus rationes, easdem si in strophis maioribusque canticis adhibitas invenerimus, nihil habebit admirationis.

*τὸν δ' ἐξαμείβοντ' οὐχ ὁρᾷς Δίρκης ὕδωρ;* quis verba facit? paedagogum olim arbitrabantur, nunc sunt qui Antigonam malint, credo ne immodestiam servo imputent. Atqui senem gravem et prudentem saepius interpellare puellulam videmus ingenio mobilem facileque a proposito aberrantem, velut 117 . 170.

Alacriter Antigona peregrina quadam armorum forma observata: *ἄλλος ἄλλος ὅδε τευχέων τρόπος,* trimetro, si modo fides habenda lectioni traditae, iambico prima arsi bis hausta — sed, silentii tutam mercedem ut repudiemus, excidere arsim iambicam initio versus aut si quando in medio versu ante vocabuli initium temporis defectu pausa aliqua compensato potuisse concedimus, versus initio ante thesim solutam excidisse (∧ ⏑⏑ ⏑—) cogimur concedere, in medio vocabulo utique et negavimus semper et negabimus, dum contractionem fieri nullam potuisse thesi vicina utraque soluta (⏑— ⏑⏑ ∧⏑⏑ ⏑— ⏑— —) uno aliquo exemplo satis luculento coarguatur. Antigona igitur *ἄλλος ἄλ-λος ὅδε τευ-* prima arsi bis contractione hausta cecinisse putanda est, ⏑⏑ ⏑⏑ ⏑⏑⏑—, in altero quidem metro anaclaseos in ionicis dimetris satis tritae atque ut supra cognovimus ne a dochmiis quidem prorsus alienae usa quadam varietate.

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Tydei postquam nomen comperit viri fortissimi (*Ἄρη δ' Αἰτωλὸν ἐν στέρνοις ἔχει*), affinitatem cum Polynice iunctam recordata eo magis miratur armorum barbariem: *οὗτος ὁ τᾶς Πολυνείκεος, ὦ γέρον, - αὐτοκασιγνήτᾳ - νύμφας / ὁμόγαμος κυρεῖ; / ὡς ἀλλόχρως ὅπλοισι, μειξοβάρβαρος.* Biiugae sunt periodi, quarum altera novos quosdam modulos ostendere videtur dimetro quattuor dactylorum introducto, quod sequitur dochmius cum metro iambico bis contracto (4 + δ + 2=); respondet alter dochmius cum trimetro iambico (δ 2 + 4).

Sed cum in armis semibarbaris admirandis denuo haeserit puellula, ad Aetolorum gentem ferocem et ad paedagogum de indutiis paciscendis internuntium deflectit oratio. Tum Antigona: *τίς δ' οὗτος ἀμφὶ μνῆμα τὸ Ζήθου περᾷ / καταβόστρυχος, ὄμμασι γοργός, εἰσ-ιδεῖν νεανίας / λοχαγός; ὡς ὄχλος νιν ὑστέρῳ ποδὶ / πάνοπλος ἀμφέπει,* trimetro iambico ter gravi (——υ—), ordine quaternario cum dochmio, tum altero trimetro, dochmio altero. Quaternarii ordines in hac et in antecedenti Antigonae cantione obvii non solum eo differunt, quod prior descendentes numeros prae se fert, alter scandentes, sed etiam eo quod qui descendit bigarum ut ita dicam particulam necessariam efficit, qui scandit bigis mesodi loco additur (6 [4+] δ: 6 δ).

Parthenopaei Atalantae filii nec nomen gentemque nec mores ignorare Antigona videtur: *ἀλλά νιν ἃ κατ' ὄρη μετὰ ματέρος - Ἄρτεμις ἱεμένα τόξοις δαμάσασ' ὀλέσειεν, / ὃς ἐπ' ἐμὰν - πόλιν ἔβα πέρσων,* duobus quaternorum dactylorum ordinibus cum Adoneo, vel rectius fortasse quaternario membro dactylico cum duobus trinariis, non sine vehementia decurrentibus, et cretico metro cum dochmio. Paedagogus cum quo iure freta ad urbem accesserit Argeorum pubes gravissimis verbis mentionem iniecerit, natura fit, ut de Polynice ius suum repetente Antigona commonefacta fratrem ipsa circumspiciat: *ποῦ δ' ὃς ἐμοὶ μιᾶς ἐγένετ' ἐκ ματρὸς πολυπόνῳ μοίρᾳ;* Puellam igitur fingamus una cum paedagogo aliquantisper speculantem, dum silentii fine facto erumpat: *ὦ φίλτατ', εἰπέ, ποῦ 'στι Πολυνείκης, γέρον;* Quos duos Antigonae versus et hiatu et variato metro discretos ne uno tenore editos esse cogitemus, impediri non argumentorum solum quam significavimus diversitate videmur, sed etiam orationis novo quasi exordio facto ad senem subito conversae: Ubinam est frater meus miserrimus? — reperire equidem nequeo — dic, carissime, ubi sit Polynices, dic, senex! Quae si quis anaphorae figura (*ποῦ δ' ὃς ἐμοί — ποῦ 'στι Πολυνείκης*) inter se coniungi dixerit, me quidem nunquam habebit assentientem.

E longinquo tandem, prope Adrasti cuius hoc uno loco mentio fit praetorium, postquam Polynicem paedagogus conspexit Antigonaeque digito monstravit, illa staturae pectorisque lineamentis satis certo recognitis:

*ἀνεμώκεος εἶθε δρόμον νεφέλας*
*ποσὶν ἐξανύσαιμι δι' αἰθέρος*

*πρὸς ἐμὸν ὁμογενέτο-ρα, περὶ δ' ὠλένας*

*δέρᾳ φιλτάτᾳ - βάλοιμ' ἐν χρόνῳ - φυγάδα μέλεον. ὡς*

*ὅπλοισι χρυσέοισιν ἐκπρεπής, γέρον,*

*ἐφοῖς ὅμοι-α φλεγέθων βολαῖς - ἁλίου.*

Qua in cantici quasi medulla utrum animi verum sincerumque calorem cum puellari quadam simplicitate mixtum verborumque et vigorem et suavitatem an numerorum ad argumenta quaeque commodissime sese applicantium lenitatem atque elegantiam magis admirere dubius haesitaris. Sunt autem duo ordines quaternarii scandentes, quibus in fine respondet didochmius cum metro cretico; inter quae mesodi locum tenet tridochmius bis purus et simplex (*δέρᾳ*

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

*φιλτάτᾳ βάλοιμ' ἐν χρόνῳ*), tertia in sede duabus thesibus solutis (*φυγάδα μέλεον*), quem antecedit didochmius solutis thesibus paene omnibus, sequitur trimeter iambicus arsium levitate insignis.

Denuo virginem ad propositum revocat paedagogus. Et statim in Amphirai admirationem abrepta Lunaeque sidus auro renidens, ut antea Dianam dominam, testata viri sanctissimi contemplandi gaudio exsultat, bis quaternis dochmiis, quorum ultimus vatis curru suo praetervehentis tranquillitatem et splendorem quasi repercutiens in tres syllabas longas*) contrahitur: *ὡς ἀτρεμαῖα κέν-τρα καὶ σώφρονα / πώλοις μεταφέρων ἰθύνει.*

Iam videtur ipsa meminisse solum e Septem ducibus reliquum esse Capaneum, virum nefarium, Parthenopaeo etiam atrociorem: *ἰώ, / Νέμεσι καὶ Διὸς βαρύβρομοι βρονταί, κεραύνιόν τε φῶς αἰθαλόεν, σύ τοι / μεγαλαγορίαν ὑπεράνορα κοι-μίζεις.* Duos didochmios sequitur membrum quaternarium scandens cum iambico quod videtur metro bis contracto; quibus revocantur quodammodo quae erant de Tydeo fratris affini semibarbaro: *οὗτος ὁ τᾶς Πολυνείκεος ὦ γέρον ... νύμφας.* Tum, lacuna ab Augusto Matthiae non sine probabilitate expleta, numeris paullo citatioribus: *ὅδ' ἐστίν, αἰχμαλωτίδας / ὃς δορὶ Θηβαίας Μυκήναισιν ⟨εὖ-χεται⟩ Δερναίᾳ τε δώσειν τριαίνᾳ, Ποσιδανίοις Ἀμυμωνίοις - ὕδασι, δουλείαν - περιβαλών;* — resonare quasi dixeris scelerati hominis verba ipsa; primo autem versu revocari videtur membrum quaternarium *καταβόστρυχος, ὄμμασι γοργός, εἰσ-* (146), item devotio illa in Parthenopaeum effusa, *ἀλλά νιν ἃ κατ' ὄρη μετὰ ματέρος Ἄρτεμις ...* (151), metro tenus repeti ultimis Antigonae verbis, *μήποτε μήποτε τάνδ' ὦ πότνια, χρυσεοβόστρυχον ὦ Διὸς ἔρνος, Ἄρτεμι ...*, nec temere utroque loco nominatim *Ἄρτεμις* invocari dea virgo, virginum ingenuarum patrona.

Subsistere hoc loco possem, si nihil amplius agerem quam ut cantici particulas accurate, quoad eius fieri primo impetu possem, dissectas recenserem. Sed gestit animus tendere in mare ignotum gurgitibus vadisque obscuris formidulosum, frustra monitus ab amicis ex litore prospectantibus viresque profusas lamentantibus. Ambiguitatem enim membrorum quorundam excusantes describere metra quam interpretari fere malunt; recte illi quidem, dummodo quod ratione et via possit erui oportere et timide viribus parcere quam temere abuti viribus non minus turpe esse concedant. Nam altius paullo scrutantibus ambiguitatem istam multo minorem quam autumant esse apparebit, nisi forte in musicophobia nobis, eurhythmicorum quorundam musicomania haud ita multo saniore, perstandum est, ut acephala metra monosyllaba fuisse poetisque cum modos facerent dimetra commutare cum trimetris licuisse credamus, quae modis musicis nuper in lucem prolatis fretus felicissime redarguit Henricus Weil**) metricorum huius aetatis omnium facile princeps. Et bene accidit, quod in longo hoc Euripidis cantico nulla fere invenitur mensurae ambiguitas: *Λατοῦς Ἑκάτα / κατάχαλκον ἅπαν* (108/9) dochmios esse forma anapaestica, *καταβόστρυχος, ὄμμασι γοργός, εἰσ-* (146) aut *ἀνεμώκεος εἴθε δρόμον νεφέλας / ποσὶν ἐξανύσαιμι δι' αἰθέρος* (163/64) nec dochmios esse anapaesticos neque anapaestos legitimos per se patet, terminationes illae versuum bis contractae, *νύμφας* (136), *κοι-μίζεις* (186), extra omnem dubitationem positae sunt, item clausula dactylica *δαμάσασ' ὀλέ-σειεν* (152); preces denique cum ingenti vi emissae, *ἀλλά νιν ἃ κατ' ὄρη* (151 ss) et *μήποτε μήποτε τάνδ' ὦ πότνια* (190 ss), utrum e membris 442 an 433 thesium primariarum constare dicas, ad mensuram certe versuum canticique structuram recte aestimandam non multum interest.

---

*) ut *τοξεύσας* Eur. Herc. 1064, *Berl. philol. W.* 1905, 787.

**) *La multiplicité des notes n'ajoute rien à la durée de la syllabe et ne modifie jamais le mètre* (*Études de litt. et de rhythm. gr.*, *Paris 1902*, *56*.) De dochmiis decurtatis, quos idem (ibidem 160) in papyro Vindobonensi deprehendere sibi visus est, *μανιάδος = κατέκλυσεν, φεῦ μόχθων = ὡς πόντου*, Eur. Or. 326 = 343, dixi Philol. 63, 1904, 334. Sed res non minus obscura quam rara.

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Sed priusquam ad opus ipsum aggrediamur, duae universae quaedam quaestiones ineundae et fieri si poterit absolvendae sunt, quarum altera est de didochmio cum iambis exaequando, altera de trimetris vulgaribus carmini amoebaeo immixtis.

Ac dochmios ad trimetra quaedam aeolica dimidiata revocandos esse si cui forte nondum erit persuasum, is nobiscum exempla aliquot recognoscat sine delectu arrepta, quem augere numerum re semel recte observata cuiusvis erit:

Aesch. Eum. 254—75. Initium carminis vel asyndeto *ὀσμὴ—προσγελᾷ* significari vidit Ad. Kirchhoff:

*ὀσμὴ βροτείων αἱμάτων με προσγελᾷ·*
255 *ὦρα ὦρα μάλ' αὖ, λεῦσσέ τε πάντα, μή*
*λάθῃ φύγδα βὰς [ὁ] ματροφόνος ἀτίτας.*
*ὅδ' αὖτέ γ' ἀλκὰν ἔχων*

*περὶ βρέτει πλεχθεὶς θεᾶς ἀμβρότου*
260 *ὑπόδικος θέλει γενέσθαι χρεῶν.*
*τὸ δ' οὐ πάρεστιν· αἷμα μητρῷον χαμαὶ*
*δυσαγκόμιστον, παπαῖ,*

*τὸ διερὸν πέδοι [κε]χύμενον οἴχεται·*
*ἀλλ' ἀντιδοῦναι δεῖ σ' ἀπὸ ζῶντος ῥοφεῖν*
265 *ἐρυθρὸν ἐκ μελέων πέλανον· ἀπὸ δὲ σοῦ*
*φεροίμαν βοσκάν*
*πώματος δυσπότου.*
*καὶ ζῶντά σ' ἰσχνάνασ' ἀπάξομαι κάτω,*
*ἀντιποίνους τίνῃς*
*μητροφόνος δύας,*
269 *ὄψει δὲ κεἴ τις ἄλλος ἤλιτεν βροτῶν*

270 *ἢ θεὸν ἢ ξένον τιν' ἀσεβῶν ἢ*
*τοκῆας φίλους,*
*ἔχονθ' ἕκαστον τῆς δίκης ἐπάξια.*

*μέγας γὰρ Ἅιδης ἐστὶν εὔθυνος βροτῶν*
*ἔνερθε χθονός,*
275 *δελτογράφῳ δὲ πάντ' ἐπωπᾷ φρενί.*

255 *λεύσσε . . τον* 257 *γ' οὖν* 260 *χερῶν* 266 *βοσκ. φερ.*
268 *an ⟨ἵν'⟩ ἀντιπ.?* *μητροφόνας* 269 *ἄλλον* 271 *τοκέας.*

| | | | |
|---|---|---|---|
| *trim* H | 6 | *δδ* H | 6 |
| *δδ* | 6 | *trim* | 6 |
| *δδ.* | 6 | *δδ* | 6 |
| *dim* | 4 22 | *δ* | 3 |
| | | *dim.* | 4 |
| *δδ* H | 6 | *trim* H | 6 |
| *δδ.* | 6 | *dim* | 4 |
| *trim* | 6 | *δ* | 3 |
| *dim* | 4 22 | *trim* | 6 44 |

*δδ*
*δ*
*trim.* 15

*trim*
*δ*
*δδ* 15

Sunt qui notas musicas aut grammaticas litteras scriptas legentes sonorum ipsorum concentum audire videantur. Nihil qui audiunt, eis quae audiveris inculcare frustra conabere. Oculis facilius persuadetur. Videmus igitur bigarum partem priorem iterum e biiugis constare periodis transposito trimetro iambico leviter variatis; alteram hac quidem partitione consulto deleta didochmii in locum semel suffecisse quasi trimetrum iambicum, quae pentas videtur esse

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

schemate hoc: $a^1 a^1 a^{234} b a^{432}$. Sed hoc quidem ambiguum sit; epodicam partem ipsam quoque bipartitam bigis maioribus bis singulis dochmiis dimetrisque iambicis minorem esse vel digitis computari licet. Nititur autem totus ille computus, qui aurium non minus quam oculorum comprobatur iudicio, in didochmii cum trimetro iambico aequatione.

Soph. Ai. 348ss = 356ss:

| | |
|---|---|
| *ἰώ* | |
| *φίλοι ναυβάται μόνοι ἐμῶν φίλων* | *δδ* |
| *μόνοι ἔτ' ἐμμένοντες ὀρθῷ νόμῳ,* | *δδ* |
| | |
| *ἴδεσθέ μ' οἷον ἄρτι κῦ-* | |
| *μα φοινίας ὑπὸ ζάλης* | *tetram* |
| *ἀμφίδρομον κυκλεῖται* | *dim* |
| (sequuntur chori trimetri bini) | |

Soph. O. C. 1477ss = 1491ss:

| | |
|---|---|
| *ἔα ἔα* (tonat) | *interiectio* |
| *ἰδοὺ μάλ' αὖ-θις ἀμφίσταται* | |
| *διαπρύσιος ὄτοβος.* | |
| *Ἴλαος, ὦ δαίμων,* | |
| 1480 *Ἴλαος, εἴ τι γᾷ* | *iamb δδδδ* |
| | |
| *ματέρι τυγχάνεις ἀφεγγὲς φέρων.* | |
| *ἐναισίου δὲ σοῦ τύχοι-* | |
| *μι μηδ' ἄλαστον ἄνδρ' ἰδών* | *δδ tetram* |
| | |
| *ἀκερδῆ χάριν μετάσχοιμί πως.* | *δδ* |
| *Ζεῦ ἄνα, σοὶ φωνῶ* | *δ* |
| (sequuntur trimetri quini = 2 1 2 et 5) | |

1483 *συντύχοιμι* 1485 integro dochmio in antistropha (1799) respondet dochmius quadrisyllabus *ἄϊσσ', ὦναξ*, more Euripideo.

Eur. Hipp. 811—16, amplioris carminis iambodochmiaci (de quo *Neue Jahrbb.* XV 1905, 103/4) prooemium:

| | |
|---|---|
| *ἰὼ ἰώ, τάλαινα μελέων κακῶν·* | *δδ* |
| *ἔπαθες, εἰργάσω* | *δ* |
| *τοσοῦτον ὥστε τούσδε συγχέαι δόμους,* | *trim* |
| *αἰαῖ τόλμας,* | *δ* |
| | |
| *βιαίως θανοῦσ' ἀνοσίῳ τε συμ-* | *δδ* |
| *φορᾷ, σᾶς χερὸς πάλαισμα μελέας.* | *δδ* |
| *τίς ἄρα σάν, τάλαιν', ἀμαυροῖ ζόαν;* | *δδ* |

Alteram quaestionem quae est de perpetuis actorum quorundam trimetris cantioni alienae immixtis, si qua ratione agendi fuissent trimetri isti neque orationis habitu nec numerorum incessu a vulgari diverbiorum usu abhorrentes accurate describendum, si in stichomythiae

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

naturam atque originem, in paracatalogae vim ac notionem inquirendum esse hoc loco existimaremus, amplioris aut infinitae disputationis futuram esse patet. Id paucioribus videtur expediri posse, quod universi iudicii fundamentum quasi debet esse, utrum, totum cantici corpus si spectamus, in rationem quasi inducendi sint isti trimetri an pro intercalaribus membris habendi ad ipsam periodorum conformationem nihil pertinentibus.

Eurip. Herc. vv. 1178 ss. Amphitryonis cantioni Theseus sex inserit trimetros iambicos, idem ter quater melicos incohat ordines, quos continuet atque absolvat Amphitryo, velut *εὔφημα φώ-νει — βουλομένοισιν ἐπαγγέλλῃ*. Haec versuum frustula aliter atque integros illos versus a Theseo agi non minus absurdum videtur quam ordinis iambelegi non dissimilis partem cantari, partem nude quasi, musicis sonis nullis accinentibus dico, recitari. Plura de actione sciscitanti non habeo quod respondeam. De totius vero cantici illius structura certius affirmare quidquam vel propterea arduum est, quod lacuna ante *τί φῄς; τί δράσας;* (1188) a Wilamowitzio recte indicata quanta fuerit nisi coniectura assequi non possumus. Sed alia exstant exempla satis multa eaque satis certa.

Praemittere Euripideis iuvat *κομμόν* Sophocleum, Aiac. vv 879 ss = 925 ss:

| | | | |
|---|---|---|---|
| | *τίς ἄν δῆτά μοι, τίς ἄν φιλοπόνων* | δ δ | |
| | *ἁλιαδᾶν ἔχων ἀύπνους ἄγρας,* | δ δ | |
| | *ἢ τίς Ὀλυμπιάδων, θεᾶν ἢ ὀρτῶν* | 3 δ | |
| 885 | *Βοσπορίων ποταμῶν, τὸν ὠμόθυμον* | 3 3 | = 12 *metra* |
| | *εἴ ποθι πλαζόμενον λεύσσων* | cr δ | |
| | *ἀπύοι; σχέτλια γάρ* | cr cr | |
| | *ἐμέ γε τὸν μακρῶν αλάταν πόνων* | δ δ | |
| | *οὐρίῳ μὴ πελάσαι δρόμῳ,* | cr δ | |
| 890 | *ἀλλ' ἀμενηνὸν ἄνδρα μὴ λεύσσειν ὅπου.* | dim + mon (an: ch + dim?) | = 12 + 1 |

Sequuntur (891): *δ *trim δ *trimm duo *trim* = 15
(897): *τί δ' ἔστιν;* (943 *ξυνανδῶ*) = 1

Tum post duos Tecmessae *trimetros

| | | | |
|---|---|---|---|
| 900 | *ὤμοι ἐμῶν νόστων·* | dim= | |
| | *ὤμοι, κατέπεφνες, ἄναξ, ⟨σόν⟩* | dim | |
| | *τόνδε συνναύταν, ὦ τάλας·* | dim= monom | |
| | *ὦ ταλαίφρων γύναι.* | dim | = 15 |

Tum (904): **trim *trim *trimm duo* = 12

Denique 908:

| | | |
|---|---|---|
| *ὤμοι ἐμᾶς ἄτας, οἷος ἄρ' αἱμάχθης* | δ δ | |
| *ἄφρακτος φίλων* | δ | |
| *ἐγὼ δ' ὁ πάν-τα κωφός, ὁ πάντ' ἄιδρις* | 2 3 | |
| *κατημέλησα. παῖ παῖ* | 2 2 | |
| *κεῖται ὁ δυστράπελος δυσώνυμος Αἴας.* | 3 3 | = 12 |

In versuum compositione id notatu dignum, dochmiorum vicibus fungi non solum formas contractas, velut ∪ — — — 891. 893, sed trinaria etiam membra haec: — ⏑⏑ — ⏑⏑ — 884. 885. 913, ∪ — ∪ — ⏑ 885, ∪ — ⏑⏑ — ⏑⏑ — 911, ∪ — ⏑⏑ — — 914, in quibus dactylicum quod videtur utrum ex asclepiadeis ⏑ ⏑⏑ — ⏑⏑ —, an prima arsi abiecta ex prosodiaco membro ∪ — ⏑⏑ — ⏑⏑ — repetendum esse videatur, in medio relinquam. Structurae ratio ea est, ut melicis periodis non semel respondere coryphaei vel Tecmessae *trimetri videantur coll. vv 879—85 ∼ *904—07 ∼ 908—14. Quae in *ὤμοι ἐμῶν - νό-στων: ὤμοι κατέπε- (φνες ἄναξ): ὤμοι ἐμᾶς ἄτας* apparet variationis vis atque audacia, ut aliis odiosa et molesta fore putanda est, ita nobis est iucundissima; quem locum in arte metrica late patentem adhuc nemo fere attigit.

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Eur. Hec. 684—722. Post servae coryphaei Hecubae trimetros viginti sex 'modos Bacchiacos' incipit Hecuba. En schema cantionum adiectis servae vel coryphaei *trimetris.

δ, dim dim δ. *trim; trim. δδ· δδ + dim ;
3 4 4 3 *6 6 6 6+4 = 42 th. pr.

*trim. δδ, δ,δ, δ; *trim. trim, δ; *trim.
6 6 6 3 *6 6 3 *6 = 42 th. pr.

} = 21 metra = 7 trimetra

Incisionem post ἀ-μέρα μ᾽ ἐπι-σχήσει; (lectionem traditam tuetur glossa *M* παύσει ἢ σχήσει) contractione duplici significatam metrorumque bipartitionem servae et coryphaei trimetris assumptis commendatam confirmat sententiarum subinde artissime conexarum in hoc ipso loco intermissio. At exime quattuor illos trimetros: concidet canticum. Nam quae in fine reliqua sunt, δδ δδ(?) δδ Hecubae, *trimeter coryphaei, δδ δδ Hecubae, *trimeter, trimeter et δδ δδ δδ δδ Hecubae, duo**trimetri, metra quadraginta quinque, bigas modo instauratas trimetro superantia — mesodi quasi loco segregandam esse dixeris coryphaei interrogationem ab Hecuba male auditam (713) vel si malueris Hecubae quemadmodum dicat id quod sentiat frustra circumspicientis vocem, ἄρρητ᾽ ἀνωνόμαστα θαυμάτων πέρα (714) — sed haec quidem cantici pars per se stare exemptis quattuor coryphaei trimetris necessitate urgente poterit, totum canticum, 21 : 21 . 21 [3] 21 metra, pentas mesodica, aut his aut illis quattuor trimetris cogitatione quasi remotis non poterit.

Eur. Iph. Taur. vv. 827 ss tres facile discernuntur partes, quarum ultimam (869 ss) efficit Iphigeniae monodia, mediam (850—68) tranquillior paullo de casu Aulidensi sermo, primam recens sororis fratrisque exsultatio. Atque haec quidem pars quattuor continet vel (exempto didochmio qui perhibetur 832) tres Orestis trimetros iambicos; restant Iphigeniae cantiones tres:

ὦ φίλτατ᾽, οὐδὲν ἄλλο κτλ
trim trim[1]) dim = metra 8
τόδ᾽ ἔτι βρέφος ἔλιπον κτλ
δ cret δδ. tetram[2]) δδδ = 14
3 [2] 3 3 [8] 3 3 3
ἄτοπον ἀδονὰν κτλ
δδ· trim$_H$ δ, dim monom δδδ an + an (= δδ) cret + cret = 20 vel 6 + 14
6 6 3 4 2 3 3 3 6 4

Periodorum trias vel tetras satis distorta uno quasi ictu concinnatur adiectis *Orestis trimetris, ut trias evadat metrorum 8; *9 14 : *3 6 14 vel 8; 23 : 23. Strictim addere satis habeo eandem e nostris quidem rationibus metrorum summam aliter paullo digestam recurrere in Iphigeniae monodia.

Tertium denique exemplum Euripideum, Andr. 825 ss, ipsum loquatur. Binas Hermionae bigas antistrophice congruentes singulis nutricis trimetris clare distinctas excipiunt Hermionae et *nutricis (secundum lectiones vulgo receptas) haec:

quatern δδ δδ; *trim monom dim dim δδ δδ
4 6 6 *6 : 2 4 4 6 6

*trim *trim δδ δδ. δδδ. δδ; δδ; δ quatern octon δ
*6 *6 6 6 6[3] 6 6 3 4 4 + 4 3.

Unde colligi metra 11 : 11 . 15 [δ] 15 cum animadverteris, quod cuique respondere membrum videatur facile apparebit.

---

[1]) χθονὸς ἀπὸ libri, transposuit Wilamowitz.

[2]) Lectionis traditae, ὦ κρείσσον᾽ ἢ λόγοισ(ιν) εὐ-τυχῶν ἐμοῦ ψυχά, metrum fere idem est quod flagitatur, εὐτυχοῦσ᾽ ἐμὰ coniecit Markland.

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Nunc redeo ad *τειχοσκοπίαν* illam Thebanam, quam admodum paucis absolvamus. Quattuordecim vel duodecim Godofredi Hermanni cantiunculas si quis trimetris paedagogi omnibus, Antigonae eis quibus colloqui eam cum paedagogo manifestum est (123/24 . 132/33 . 141 . 158 . 161/62 . 171/72 . 179/80) omissis coniungere ita voluerit, ut stropharum aliquid simile evadat, dyades triades pentades efficere sibi videri poterit has: *α' β' γ'* = 12 . 12 . 15 th. prim., *δ' ε'* (de Hippomedonte) = 14 . 6 . 14, *ϛ' ζ'* (de Tydeo et Parthenopaeo) = 9 . 9 . 4 + 9 . 9, *ι'* (de Polynice) 14 . 9 . 14, *ια'* (de Amphiarao) 12 . 12, *ιβ'* (de Capaneo) 18 . 4 + 18 18 (vel similiter) thes. prim.; id efficere non poterit, quin ridendum in modum circumsilire videantur quae sunt de Parthenopaeo (*η'*) quindecim, de Polynice (*θ'*) theses primariae novem. At ubi primum trimetros assumpserimus, occurrent nobis grandia periodorum quasi corpora erecto incessu et habitu quodam regali. Agmen ducit trias de universo exercitus aspectu. Sequitur trias uno quasi dochmio minor cum pentade novos quosdam numeros inaugurante de Polynicis viribus et de Hippomedonte. Ad priores modos redire trias videtur de Tydeo. Tum tranquillioribus interiectis de Aetolorum gente et de paedagogi legatione observationibus praeceps in iras et devotiones abripitur pentas de Parthenopaeo, cui post interpositam egregiam de Polynice fratre carissimo pentadem superiores de Polynicis copiis et de Hippomedontis forma gigantea periodos in unum quasi corpus confundentem manifesto respondet heptas ab Amphiarai admiratione ad vehementissimas de Capaneo preces atque exsecrationes sese attollens. Est igitur canticum omne ($a^1\, a^2\, a^3 : a^1,\ b^{a^3\, a^1},\ a^{2+3},\ b^{a^1+3} = a : a\, b$) trias epodica bigarum parte altera ($a^{2+3}$) et epodi dimidia parte priore ($b^{a^3\, a^1}$) pectinatim inter se implexis.

Non exspecto, dum inventorum meorum aemuli accurrant. Quae cum nullo fere antiquorum artificum testimonio confirmari, eis autem quae recentiorum plerique aut in his graecis aut in vernaculis carminibus recitandis subaudire solent vehementer repugnare videantur, magis aut suspecta sunt aut propter novitatem mira, quam ut continuo pluribus probentur. Id eos qui veri quam sui amantiores sunt rogatos velim, ne si identidem numerorum proprietate contempta quae toto caelo diversa putari solent exaequasse equidem videar, obstupefacti de canticorum instauratione desperare maturent. Nam vereor, ne et variare quae eadem vi esse velint et in omni variatione mirum quendam concentum retinere Graecorum sit proprium. *ἔστι γὰρ ἁρμονία πολυμιγέων ἕνωσις καὶ δίχα φρονεόντων συμφρόνησις.*

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Nunc redeo ad admodum paucis absolvamus. Quattuordecim vel duode as si quis trimetris paedagogi omnibus, Antigonae eis qu estum est (123/24 . 132/33 . 141 . 158 . 161/62 . 171/72 . 179/8 ropharum aliquid simile evadat, dyades triades pentades = 12 . 12 . 15 th. prim., δ' ε' (de Hippomedonte) = 14 . 6 . 9 . 9 . 4 + 9 . 9, ι' (de Polynice) 14 . 9 . 14, ια' (de Amphia 18 18 (vel similiter) thes. prim.; id efficere non poterit, ilire videantur quae sunt de Parthenopaeo (η') quindec vem. At ubi primum trimetros assumpserimus, occurrent rpora erecto incessu et habitu quodam regali. Agmen ectu. Sequitur trias uno quasi dochmio minor cum pen rante de Polynicis viribus et de Hippomedonte. Ad prior Tum tranquillioribus interiectis de Aetolorum gente et c praeceps in iras et devotiones abripitur pentas de Parth am de Polynice fratre carissimo pentadem superiores de I orma gigantea periodos in unum quasi corpus confundente hiarai admiratione ad vehementissimas de Capaneo pr s. Est igitur canticum omne ($a^1 a^2 a^3 : a^1$, $b^{a^3 a^1}$, $a^2 +$ um parte altera ($a^{2+3}$) et epodi dimidia parte priore ($b^{a^3}$

Non exspecto, d ant. Quae cum nullo fere antiquorum artificum testimo orum plerique aut in his graecis aut in vernaculis carmini nter repugnare videantur, magis aut suspecta sunt aut pr pluribus probentur. Id eos qui veri quam sui amantiore umerorum proprietate contempta quae toto caelo divers idear, obstupefacti de canticorum instauratione desperare n uae eadem vi esse velint et in omni variatione mirum n sit proprium. ἔστι γὰρ ἁρμονία πολυμιγέων ἕνωσις καὶ δίχ

Grauskala #13 B.I.G.
A 1 2 3 4 5 6 M 8 9 10 11 12 13 14 15 B 17 18 19
C Y M

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf

Universitäts- und
Landesbibliothek Düsseldorf